SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

Role of Emotional Intelligence

Ms. Priya Gurjar (Assistant Professor), Sneh Teachers Training College, Muhana, Sanganer, Jaipur, Email Id: - priyagurjar731@gmail.com

सारांष

"मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मानव का विकास क्रमिक होता है। जिस समय वह जन्म लेकर इस संसार में आता है। तो वह मात्र एक अबोध शिशु होता है। इस अवस्था में वह ना तो सामाजिक होता है ना ही असामाजिक होता है वह बाह्य वातवरण से पूर्णतया अनभिज्ञ होता है। यह अवस्था अल्प समय के लिए तथा अस्थाई होती है। जैसे–जैसे उसकी आयु बढ़ती है वैसे–वैसे वह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास करता जाता है। बालक शैशवावस्था को त्यागकर बाल्यावस्था, बाल्यावस्था को त्यागकर किशोरावस्था में पहुँचता है किशोरावस्था बालक के जीवन काल में नींव के रूप में होती है एवं बालक में भविष्य की निर्धारक होती है।

क्रो एंड क्रो ने कहा है कि 'किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है'

इस किशोरावस्था में ही बालक में क्रान्तिकारी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक परिवर्तन होते है। इस अवस्था में बालक के शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक, शैक्षिक एवं सामाजिक विकास के लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिये इसके साथ ही किशोरो को व्यावसायिक (करियर से संबंधित), धार्मिक, नैतिक, यौन शिक्षा आदि की शिक्षा के साथ–साथ निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था भी करनी चाहिये। व्यक्ति का व्यवहार पूरी तरह से संवेगात्मक बुद्धि एवं संवेगात्मक परिपक्वता पर निर्भर रहता है। शिक्षा के माध्यम से ही किशोरो की संवेगाात्मक भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर उसके लिये संवेगात्मक परामर्श की व्यवस्था की जा सकती है। शिक्षा द्वारा युवाओं में भावनात्मक बुद्विमता के परामर्श की व्यवस्था की जा सकती है।

iajesm
Quality Of Work... Never Ended...